

## International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: [www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

Vol. 7, Issue 12, December 2018

# स्वाधीनता आंदोलन एवं हिंदी काव्य

Dr. Arun Lata Verma

Associate Professor, Dept. of Hindi, M.M.H. College, Ghaziabad, U.P, India

### सार

यह सभी जानते हैं कि 15 अगस्त 1947 को हमारा देश स्वतंत्र हुआ। यह हमारे राष्ट्रीय जीवन में हर्ष और उल्लास का दिन तो है ही, इसके साथ ही स्वतंत्रता की खातिर अपने प्राण न्योछावर करने वाले शहीदों का पुण्य दिवस भी है। देश की स्वतंत्रता के लिए 1857 से लेकर 1947 तक क्रांतिकारियों व आंदोलनकारियों के साथ ही लेखकों, कवियों और पत्रकारों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी गौरव गाथा हमें प्रेरणा देती है कि हम स्वतंत्रता के मूल्य को बनाए रखने के लिए कृत संकल्पित रहें। प्रेमचंद की रंगभूमि, कर्मभूमि (उपन्यास), भारतेन्दु हरिश्चंद्र का भारत-दर्शन (नाटक), जयशंकर प्रसाद का चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त (नाटक) आज भी उठाकर पढ़िए, देशप्रेम की भावना जगाने के लिए बड़े कारगर सिद्ध होंगे। वीर सावरकर की '1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम' हो या पंडित नेहरू की 'भारत एक खोज' या फिर लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की 'गीता रहस्य' या शरद बाबू का उपन्यास 'पथ के दावेदार' -जिसने भी इन्हें पढ़ा, उसे घर-परिवार की चिंता छोड़ देश की खातिर अपना सर्वस्व अर्पण करने के लिए स्वतंत्रता के महासमर में कूदते देर नहीं लगी। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत-भारती' में देशप्रेम की भावना को सर्वोपरि मानते हुए आह्वान किया :

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।

वह नर नहीं, नर-पशु निरा है और मृतक समान है।।

देश पर मर मिटने वाले वीर शहीदों के कटे सिरों के बीच अपना सिर मिलाने की तीव्र चाहत लिए सोहन लाल द्विवेदी ने कहा :

हो जहां बलि शीश अगणित, एक सिर मेरा मिला लो।

वहीं सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झांसी की रानी' कविता को कौन भूल सकता है, जिसने अंग्रेजों की चूलों हिला कर रख दी। वीर सैनिकों में देशप्रेम का अगाध संचार कर जोश भरने वाली अनूठी कृति आज भी प्रासंगिक है :

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकृटी तानी थी,

बूढ़े भारत में भी आई, फिर से नई जवानी थी,

गुमी हुई आजादी की, कीमत सबने पहिचानी थी,

दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,

चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी,

बुंदेले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी,

## International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: [www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

Vol. 7, Issue 12, December 2018

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।

‘पराधीन सपनेहुं सुख नाहीं’ का मर्म स्वाधीनता की लड़ाई लड़ रहे वीर सैनिक ही नहीं वफादार प्राणी भी जान गए, तभी तो पं. श्याम नारायण पांडेय ने महाराणा प्रताप के घोड़े ‘चेतक’ के लिए ‘हल्दी घाटी’ में लिखा :

रणबीच चौकड़ी भर-भरकर, चेतक बन गया निराला था,

राणा प्रताप के घोड़े से, पड़ गया हवा का पाला था,

गिरता न कभी चेतक तन पर, राणा प्रताप का कोड़ा था,

वह दौड़ रहा अरि मस्तक पर, या आसमान पर घोड़ा था।

देशप्रेम की भावना जगाने के लिए जयशंकर प्रसाद ने ‘अरुण यह मधुमय देश हमारा’ , सुमित्रानंदन पंत ने ‘ज्योति भूमि, जय भारत देश’ , निराला ने ‘भारती! जय विजय करे। स्वर्ग सस्य कमल धरे’ , कामता प्रसाद गुप्त ने ‘प्राण क्या हैं देश के लिए, देश खोकर जो जिए तो क्या जिए’ , इकबाल ने ‘सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा’ , तो बालकृष्ण शर्मा ‘नवीन’ ने ‘विप्लव गान’ में कहा :

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाए

एक हिलोर इधर से आए, एक हिलोर उधर को जाए

नाश ! नाश! हां महानाश! !! की

प्रलयकारी आंख खुल जाए।

### परिचय

इन कवियों ने यह वीर रस वाली कविताएं सृजित कर रणबांकुरों में नई चेतना का संचार किया। इसी श्रृंखला में शिवमंगल सिंह ‘सुमन’ , रामनरेश त्रिपाठी, रामधारी सिंह ‘दिनकर’ , राधाचरण गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन, राधाकृष्ण दास, श्रीधर पाठक, माधव प्रसाद शुक्ल, नाथूराम शर्मा शंकर, गया प्रसाद शुक्ल स्नेही (त्रिशूल), माखनलाल चतुर्वेदी, सियाराम शरण गुप्त, अज्ञेय जैसे अगणित कवियों के साथ ही बंकिम चंद्र चटर्जी का देशप्रेम से ओत-प्रोत ‘वंदे मातरम’ गीत आजादी के परवानों को प्रेरित करता है। ‘वंदे मातरम’ आज हमारा राष्ट्रीय गीत है, जिसकी श्रद्धा, भक्ति व स्वाभिमान की प्रेरणा से लाखों युवक हंसते-हंसते देश की खातिर फांसी के फंदे पर झूल गए।[1] वहीं हमारे राष्ट्रगान ‘जन गण मन अधिनायक’ के रचयिता रवींद्र नाथ ठाकुर का योगदान अद्वितीय व अविस्मरणीय है। स्वतंत्रता दिवस के सुअवसर पर बाबू गुलाबराय का कथन समीचीन है – ‘15 अगस्त का शुभ दिन भारत के राजनीतिक इतिहास में सबसे अधिक महत्त्व का है। आज ही हमारी सघन कलुष-कालिमामयी दासता की लौह श्रृंखला टूटी थी। आज ही स्वतंत्रता के नवोज्ज्वल प्रभात के दर्शन हुए थे। आज ही दिल्ली के लाल किले पर पहली बार यूनियन जैक के स्थान पर सत्य और अहिंसा का प्रतीक तिरंगा झंडा स्वतंत्रता की हवा के झोंकों से लहराया था। आज ही हमारे नेताओं के चिरसंचित स्वप्न चरितार्थ हुए थे। आज ही युगों के पश्चात् शंख-ध्वनि के साथ जयघोष और पूर्ण स्वतंत्रता का उद्घोष हुआ था।[2]’ ‘ऐ मेरे वतन के लोगो ज़रा आंख में भर लो पानी’ गीत को याद करते हुए सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में नारों की विशेष भूमिका है। स्वतंत्रता के लिए बोले गए हर नारे ने भारतीय क्रांतिकारियों में ऐसी जान फूंक दी कि हर नारा अंग्रेजों के ताबूत में आखिरी कील साबित हुआ। यहां स्वतंत्रता संग्राम के समय के कुछ ऐसे ही नारों का हम ब्योरा दे रहे हैं :

## International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: [www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

Vol. 7, Issue 12, December 2018

इन्कलाब जिंदाबाद : भगत सिंह

दिल्ली चलो : सुभाष चंद्र बोस

करो या मरो : महात्मा गांधी

जय हिंद : सुभाष चंद्र बोस

पूर्ण स्वराज्य :

जवाहर लाल नेहरू

हिंदी, हिंदू, हिंदोस्तान :

भारतेंदु हरिश्चंद्र

वेदों की ओर लौटो :

दयानंद सरस्वती

आराम हराम है :

जवाहर लाल नेहरू

हे राम : महात्मा गांधी

भारत छोड़ो : महात्मा गांधी

जय जवान, जय किसान :

लाल बहादुर शास्त्री

मारो फिरंगी को : मंगल पांडे

जय जगत : विनोबा भावे

कर मत दो :

सरदार वल्लभ भाई पटेल

संपूर्ण क्रांति :

जयप्रकाश नारायण

## International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: [www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

Vol. 7, Issue 12, December 2018

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा : श्याम लाल गुप्ता पार्षद

वंदे मातरम् : बंकिमचंद्र चटर्जी

जन-गण-मन अधिनायक जय हे : रवींद्र नाथ टैगोर

साम्राज्यवाद का नाश हो :

भगत सिंह

स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है :

बाल गंगाधर तिलक

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है :

राम प्रसाद बिस्मिल

सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा : अल्लामा इकबाल

तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा : सुभाष चंद्र बोस

साइमन कमीशन वापस जाओ : लाल लाजपत राय

हू लिक्स इफ इंडिया डाइज : जवाहर लाल नेहरू

मेरे सिर पर लाठी का एक-एक प्रहार, अंग्रेजी शासन के ताबूत की कील साबित होगा :

लाला लाजपत राय

मुसलमान मूर्ख थे, जो उन्होंने सुरक्षा की मांग की और हिंदू उनसे भी मूर्ख थे, जो उन्होंने उस मांग को ठुकरा दिया : अबुल कलाम आजाद

इन कविताओं से आती है वतन की खुशबू

15 अगस्त को हम आजादी की नई वर्षगांठ मनाने जा रहे हैं। आजादी के इस सुखद एहसास के बीच हम लाए हैं आपके लिए छह ऐसी कविताएं, जिनसे मिलती है अपने वतन की खुशबू...

पुष्प की अभिलाषा : माखनलाल चतुर्वेदी

चाह नहीं मैं सुरबाला के, गहनों में गूथा जाऊं

चाह नहीं, प्रेमी-माला में, बिंध प्यारी को ललचाऊं

चाह नहीं, सम्राटों के शव, पर हे हरि, डाला जाऊं

## International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: [www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

Vol. 7, Issue 12, December 2018

चाह नहीं, देवों के सिर पर, चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।  
मुझे तोड़ लेना वनमाली!, उस पथ पर देना तुम फेंक,  
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।  
आह्वान : अशफाकउल्ला खां  
कस ली है कमर अब तो, कुछ करके दिखाएंगे,  
आजाद ही हो लेंगे, या सर ही कटा देंगे  
हटने के नहीं पीछे, डरकर कभी जुल्मों से  
तुम हाथ उठाओगे, हम पैर बढ़ा देंगे  
बेशस्त्र नहीं हैं हम, बल है हमें चरखे का,  
चरखे से ज़मीं को हम, ता चर्खं गुंजा देंगे  
परवाह नहीं कुछ दम की, ग़म की नहीं, मातम की,  
है जान हथेली पर, एक दम में गंवा देंगे  
उफ़ तक भी जुबां से हम हरगिज़ न निकालेंगे  
तलवार उठाओ तुम, हम सर को झुका देंगे  
सीखा है नया हमने लड़ने का यह तरीका  
चलवाओ गन मशीनें, हम सीना अड़ा देंगे...  
आजादी : राम प्रसाद बिस्मिल  
इलाही ख़ैर! वो हरदम नई बेदाद करते हैं,  
हमें तोहमत लगाते हैं, जो हम फ़रियाद करते हैं  
कभी आज़ाद करते हैं, कभी बेदाद करते हैं  
मगर इस पर भी हम सौ जी से उनको याद करते हैं  
असीराने-क़फ़स से काश, यह सैयाद कह देता

## International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: [www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

Vol. 7, Issue 12, December 2018

रहो आज़ाद होकर, हम तुम्हें आज़ाद करते हैं  
रहा करता है अहले-गाम को क्या-क्या इंतज़ार इसका  
कि देखें वो दिले-नाशाद को कब शाद करते हैं  
यह कह-कहकर बसर की, उम्र हमने कैदे-उल्फत में  
वो अब आज़ाद करते हैं, वो अब आज़ाद करते हैं  
सितम ऐसा नहीं देखा, जफ़ा ऐसी नहीं देखी,  
वो चुप रहने को कहते हैं, जो हम फ़रियाद करते हैं  
यह बात अच्छी नहीं होती, यह बात अच्छी नहीं करते  
हमें बेकस समझकर आप क्यों बरबाद करते हैं?  
कोई बिस्मिल बनाता है, जो मक़तल में हमें 'बिस्मिल'  
तो हम डरकर दबी आवाज़ से फ़रियाद करते हैं  
मेरा वतन वही है : इकबाल  
चिश्ती ने जिस ज़मीं पे पैग़ामे हक़ सुनाया  
नानक ने जिस चमन में बदहत का गीत गाया  
तातारियों ने जिसको अपना वतन बनाया  
जिसने हेजाजियों से दशते अरब छुड़ाया  
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है  
सारे जहां को जिसने इल्मो-हुनर दिया था,  
यूनानियों को जिसने हैरान कर दिया था  
मिट्टी को जिसकी हक़ ने ज़र का असर दिया था  
तुर्कों का जिसने दामन हीरों से भर दिया था  
मेरा वतन वही है, मेरा वतन वही है...

## International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: [www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

Vol. 7, Issue 12, December 2018

जिस देश में गंगा बहती है : शैलेंद्र  
होठों पे सच्चाई रहती है, जहां दिल में सफ़ाई रहती है  
हम उस देश के वासी हैं, हम उस देश के वासी हैं  
जिस देश में गंगा बहती है  
मेहमां जो हमारा होता है, वो जान से प्यारा होता है  
ज़्यादा की नहीं लालच हमको, थोड़े में गुज़ारा होता है  
बच्चों के लिए जो धरती मां, सदियों से सभी कुछ सहती है  
हम उस देश के वासी हैं, हम उस देश के वासी हैं  
जिस देश में गंगा बहती है...  
मेरे देश की आंखें : अज्ञेय  
नहीं, ये मेरे देश की आंखें नहीं हैं  
पुते गालों के ऊपर  
नकली भवों के नीचे  
छाया प्यार के छलावे बिछाती  
मुकुर से उठाई हुई  
मुस्कान मुस्कुराती  
ये आंखें  
नहीं, ये मेरे देश की नहीं हैं...  
तनाव से झुर्रियां पड़ी कोरों की दरार से  
शरारे छोड़ती घृणा से सिकुड़ी पुतलियां  
नहीं, ये मेरे देश की आंखें नहीं हैं...  
और कितने काल-सागरों के पार तैर आईं

## International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: [www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

Vol. 7, Issue 12, December 2018

मेरे देश की आंखें...

### विचार-विमर्श

लेखनी प्रत्येक काल में समाज का मार्गदर्शन करती आई है। जब – जब समाज दिग्भ्रमित होता है, राजनीति पथ भ्रष्ट होती है, [3] और जनसाधारण कर्तव्यविमूढ़ की अवस्था में आता है, तब- तब लेखनी के सिपाही उठकर लेखनी के माध्यम से इन सब का मार्गदर्शन करते हैं। भारत का स्वतंत्रता आंदोलन भी इसका अपवाद नहीं है। पराधीनता के उस काल में जब सर्वत्र पराभव ही पराभव दिखाई देता था, तब हमारे देश में अनेकों ऐसे क्रांतिकारी और साहित्यकार उत्पन्न हुए, जिन्होंने अपनी पवित्र लेखनी के माध्यम से हमारे समाज का मनोबल और आत्मबल बनाए रखने का प्रशंसनीय कार्य किया। स्वतंत्रता आन्दोलन के इस महायज्ञ में साहित्यकारों ने तत्कालीन समाज में चेतना के ऐसे बीज बोये, जिनके अंकुरों की सुवास से सुवासित वृक्षों ने उस झंझावात को जन्म दिया, जिसने समाज के हर वर्ग को इस आंदोलन में ला खड़ा किया। गोपालदास व्यास के शब्दों में-“आजादी के चरणों में जो जयमाला चढ़ाई जाएगी। वह सुनो, तुम्हारे शीशों के फूलों से गूंथी जाएगी।” व्यास जी ने अपने उन महान क्रांतिकारियों को जिन्होंने देश के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर किया, ऐसे भावपूर्ण शब्दों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर मानो समस्त राष्ट्र की ओर से ही उनकी स्मृतियों पर अपने पुष्प अर्पित कर दिए हैं। [4] यह सच है कि आज जब – जब भी हमारे देश में स्वतंत्रता दिवस या गणतंत्र दिवस की धूम मचती है तो हमें अपने अनेकों महान क्रांतिकारियों और बलिदानियों की स्मृतियां आ घेरती हैं। हमारे चारों ओर उनकी स्मृतियां बड़े प्रश्न चिन्ह बनकर आ खड़ी होती हैं, और हमसे पूछती हैं कि आपने हमारे सपनों का भारत बनाने की दिशा में क्या किया? कितना किया? और कैसे किया? जब स्वतंत्रता आंदोलन की हमारे देश में धूम मची थी, तब लगभग हर प्रांत के, लगभग हर भाषा-भाषी क्षेत्र के महान साहित्यकारों, कवियों, लेखकों ने अपने – अपने ढंग से अपने- अपने क्षेत्र के लोगों का आजादी के आंदोलन में कूदने का आवाहन किया। माइकेल मधुसूदन ने बंगाली में, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हिन्दी में, नर्मद ने गुजराती में, चिपलूणकर ने मराठी में, भारती ने तमिल में तथा अन्य अनेक साहित्यकारों ने विभिन्न भाषाओं में राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण उत्कृष्ट साहित्य का सृजन किया। यह ऐसा साहित्य लेखन था जिसे पढ़कर या सुनकर हमारे देश की तत्कालीन युवा पीढ़ी के रक्त में क्रांति का उबाल आ जाता था। उनकी बाजूए फड़कने लगती थीं, और मन राष्ट्र वेदी पर बलि होकर देश के लिए सर्वस्व न्योछावर करने की भावना से ओत प्रोत हो उठता था। इन साहित्यिक कृतियों ने भारतवासियों के हृदयों में सुधार व जागृति की उमंग उत्पन्न कर दी। स्वतंत्रता के इस आंदोलन में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का नाम अग्रणी है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने तत्कालीन युवा पीढ़ी के भीतर ऐसा उबाल पैदा किया था कि उनके साहित्य को पढ़कर हमारे देश के अधिकांश युवा अंग्रेजी सरकार के अन्याय, प्रतिशोध और अत्याचार के विरुद्ध उठ खड़े हुए थे। उन्हें इस बात का बड़ा क्षोभ था कि अंग्रेज भारत की सारी सम्पत्ति लूटकर विदेश ले जा रहे हैं। उनकी लेखनी ‘भारत दुर्दशा’ से अवगत कराते हुए लिखती है-“रोबहु सब मिलि, अबहु भारत भाई, हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई।” “अंधेर नगरी चौपट राजा” व्यंग्य के माध्यम से भारतेन्दु जी ने तत्कालीन राजाओं की कार्यशैली पर करारा व्यंग्य किया था। इसके माध्यम से उन्होंने जनता को बताया था कि हमारे वर्तमान शासक घोर स्वार्थी हैं, और जनता के दुख-दर्द से उन्हें कोई लेना देना नहीं है, इसलिए ऐसे स्वार्थी और कर्तव्यविमुख शासकों के विरुद्ध आंदोलन करना देशवासियों का परम धर्म है। प्रताप नारायण मिश्र, बद्रीनारायण चौधरी, राधाकृष्ण दास, ठाकुर जगमोहन सिंह, पं. अम्बिका दत्त व्यास, बाबू रामकृष्ण वर्मा आदि समस्त साहित्यकारों ने स्वतंत्रता आंदोलन की धधकती हुई ज्वाला को प्रचंड रूप दिया। [5] उन्होंने अपने स्तर से और अपने ढंग से क्रांति की ज्वाला को तो प्रचंड किया ही साथ ही यह बताने में भी संकोच नहीं किया कि अंग्रेजी सरकार का इस देश के प्रति कोई कर्तव्य नहीं है। वह अपने देश के प्रति कर्तव्यबद्ध है, और इस देश के लोगों को वह केवल और केवल अपना दास मानती है। उसके विचारों में और उसकी कार्यशैली में कहीं पर भी ऐसा भाव नहीं झलकता कि वह लोकतंत्र में विश्वास रखते हुए भारतवासियों के प्रति थोड़ी-सी भी सहानुभूति रखती हैं। इन सबकी रचनाओं ने राष्ट्रीयता के विकास में बहुत योगदान दिया। बंकिमचन्द्र ने ‘आनंद मठ’ व ‘वंदेमातरम्’ की रचना की। वंदे मातरम् गीत ने हमारे सभी देशवासियों को एक सूत्र में पिरो कर उस समय ऐसा रोमांस खड़ा किया था कि अंग्रेज सरकार इस शब्द मात्र से ही कांपने लगी थी जहां पर भी वंदे मातरम् का गुण सुनाई दे जाता था वही अंग्रेज सरकार अनुमान लगा लेती थी यहां पर निश्चय ही क्रांति की आग दहक रही है। बंकिम बाबू की आनंदमठ ने बंगाल में क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की पाठ्य पुस्तक का कार्य किया। माखन लाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा ‘नवीन’ और सुभद्रा कुमारी चौहान ने राष्ट्र प्रेम को ही मुखरित नहीं किया अपितु स्वतंत्रता आंदोलन में भी भाग लिया। माखन लाल चतुर्वेदी ने फूल के माध्यम से अपनी देशभक्ति की भावना को व्यक्त किया:-“चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं चाह नहीं मैं प्रेमी माला में बिंधप्यारी को ललचाऊं मुझे तोड़ लेना ए वन माली उस पथ पर देना फेंकमातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जाए वीर अनेक।” “राष्ट्रकवि



## International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: [www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

Vol. 7, Issue 12, December 2018

मैथिलीशरण गुप्त ने भारत-भारती के द्वारा राष्ट्रियता का प्रचार-प्रसार कर भारत के रणबांकुरों को स्वतंत्रता आंदोलन में कूदने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बहुत सरल शब्दों में देश के लोगों की चेतना को झकझोर कर रख दिया था। [6] उनकी बनाई देश भक्ति की कविताओं को लोग आज भी पढ़ कर रोमांचित हो उठते हैं। उन्होंने सोई हुई भारतीयता को जगाते हुए कहा-“जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है वह नर नहीं, पशु निरा है और मृतक समान है।” तत्कालीन साहित्यकारों में शिरोमणि लेखक, कलम के सिपाही मुंशी प्रेमचंद्र को यदि आज इस अवसर पर स्मरण नहीं किया गया तो भी यह लेख अपूर्ण ही माना जाएगा। मुंशी प्रेमचंद्र जी हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्यकारों की ओर से वह हस्ताक्षर हैं जिन पर हम सबको गर्व और गौरव की अनुभूति होती है। इस महान साहित्यकार की रचनाओं ने मृतप्रायः लोगों में भी प्राण फूंक दिए। उन्होंने अपने अधिकारों के प्रति उदासीन लोगों को जगाने और क्रूर तानाशाही के विरुद्ध उठ खड़े होने का सफल आवाहन किया जो अभी तक क्रूर तानाशाही के सामने बोलना तक उचित नहीं मानते थे और क्रूर तानाशाही के अत्याचारों को सहना जिनकी नियति बन चुका था। मुंशी प्रेमचंद्र की न जाने कितनी रचनाओं पर रोक लगी, न जाने कितना साहित्य जलाने की कोशिश की गई, परन्तु उनकी लेखनी सदा एक सच्चे क्रांतिकारी की भांति स्वतंत्रता आंदोलन में विस्फोटक का कार्य करती रही। मुंशी जी के पीछे अंग्रेज़ सरकार का गुप्तचर विभाग लगा रहा तथा उनकी रचना ‘सोज़े वतन’ के विषय में उन्हें तलब किया गया। [7] नवाब राय की स्वीकृति पर उन्हें डराया-धमकाया गया तथा ‘सोज़े वतन’ की प्रतियां जला दी गईं, परन्तु एक सच्चे क्रांतिकारी की भांति अंग्रेज़ों की इस दमनकारी नीति से प्रभावित हुए बिना मुंशी प्रेमचंद्र की लेखनी इस आंदोलन में वैचारिक क्रांति उगलती रही। “मैं विद्रोही हूँ जंग में विद्रोह कराने आया हूँ क्रांति का सरल सुनहरा राग सुनाने आया हूँ” का शंख बजाने वाले कवि नीरज की उक्त पंक्तियों से ही उनका स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान स्पष्ट झलकता है। लोगों को अत्याचार के आगे न झुकने की प्रेरणा देते हुए नीरज ने कहा था-“देखना है जुल्म की रफ्तार बढ़ती है कहां तक देखना है बम की बौछार है कहां तक।” इसी प्रकार ‘दिनकर’ की तूलिका ने ऐसे ही वीरों के स्वागत में लिखा-“कलम आज उनकी जय बोलजला अस्थियां बारी-बारी छिटकायी जिसने चिंगारी जो चढ़ गए पुण्य वेदी पर लिए बिना गर्दन का मोल कलम आज उनकी जय बोल।” कविवर प्रसाद ने लेखनी के द्वारा जनमानस को यह कहकर उद्वेलित किया-“हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती।” श्याम लाल गुप्त परिषद की लेखनी के साथ तो हर तरफ़ यही आवाज़ गूँज उठी-“विजयी विश्व तिरंगा प्यारा झंडा ऊंचा रहे हमारा।” मित्रों! आज देश की जो परिस्थितियां बनी हुई हैं, उनमें भी सर्वत्र एक आवाहन है, एक चुनौती है, चैलेंज है। हमारे लिए सर्वत्र एक पुकार है, ललकार है, एक आवाहन है – क्रांति का। और उठ खड़े होकर देशद्रोहियों, देश विरोधियों और राष्ट्रघातियों को कड़ा पाठ पढ़ाने का। मां भारती आज भी बंधनों में जकड़ी खड़ी है। [8] कहीं ईसाइयत इसको जकड़ रही है, तो कहीं इस्लाम अपना विकराल रूप दिखा रहा है। देशद्रोहियों को राजनीति के गद्दार लोग अपना समर्थन देकर यह स्पष्ट कर रहे हैं कि देश में आज भी जयचंद की परंपरा बनी हुई है। ऐसे में फिर हमें किसी दिनकर की, किसी मैथिलीशरण गुप्त की, किसी प्रेमचंद्र की आवश्यकता है। फिर हमें उनकी लेखनी से निकलने वाले गरम लहू से बनने वाले सुभाष चंद्र बोस की आवश्यकता है, भगत सिंह की आवश्यकता है, चंद्रशेखर और बिस्मिल की आवश्यकता है। यज्ञ वेदी फिर सजी हुई है, क्रांति की धूम के लिए। समझ लो कि स्वतंत्रता आंदोलन को तैयार करने की सारी भूमिका बन चुकी है। अग्नि प्रचंड करने भर की देर है। शत्रु फिर फन फैला रहे हैं। यदि हम शांत रह गए या इस विकराल स्थिति के विरुद्ध उठ खड़े होने का साहस खो बैठे तो बड़े संघर्ष के पश्चात जिस आजादी को प्राप्त किया था, वह हमसे फिर गुम हो सकती है। आज के हमारे कवियों का और साहित्यकारों का यह महती दायित्व बनता है कि वह इस देश के बारे में सोचें और उसी परंपरा को जीवित रखें जो मैथिलीशरण गुप्त की परंपरा है, प्रेमचंद्र की परंपरा है, नीरज की परंपरा है, और यह स्मरण रखें कि यहां पर राम का चरित्र लिखने के लिए वाल्मीकि तब मिलता है जब राम इस योग्य होता है कि कोई उसकी बारे में लेखनी चला सके। कहने का अभिप्राय है कि यहां पर चाटुकारिता को अपना उद्देश्य नहीं माना जाता और दरबारी कवि होना यहां पर अभिशाप है। यहाँ दरबार कवि ढूँढता है, कवि दरबारों को नहीं ढूँढते। [9] यहां पर कवि किसी मोह के वशीभूत होकर नहीं लिखते। यहां तो राष्ट्र जागरण के लिए लिखा जाता है, राष्ट्रोत्थान के लिए लिखा जाता है, राष्ट्र – उद्धार के लिए लिखा जाता है। क्योंकि सब कवि अपना यह दायित्व समझते हैं कि राष्ट्र जागरण, राष्ट्रोद्धार और राष्ट्रोत्थान ही उनकी लेखनी का एकमात्र व्रत है, एकमात्र संकल्प है।

### परिणाम

यह हमारे राष्ट्रीय जीवन में हर्ष और उल्लास का दिन तो है ही इसके साथ ही स्वतंत्रता की खातिर अपने प्राण न्यौछावर करने वाले शहीदों का पुण्य दिवस भी है। देश की स्वतंत्रता के लिए 1857 से लेकर 1947 तक क्रांतिकारियों व आन्दोलनकारियों के साथ ही

## International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: [www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

Vol. 7, Issue 12, December 2018

लेखकों, कवियों और पत्रकारों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी गौरव गाथा हमें प्रेरणा देती है कि हम स्वतंत्रता के मूल्य को बनाये रखने के लिए कृत संकल्पित रहें।

प्रेमचंद की 'रंगभूमि, कर्मभूमि' उपन्यास, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का 'भारत-दर्शन' नाटक, जयशंकर प्रसाद का 'चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त' नाटक आज भी उठाकर पढ़िए देशप्रेम की भावना जगाने के लिए बड़े कारगर सिद्ध होंगे। वीर सावरकर की "1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम" हो या पंडित नेहरू की 'भारत एक खोज' या फिर लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की 'गीता रहस्य' या शरद बाबू का उपन्यास 'पथ के दावेदार' जिसने भी इन्हें पढ़ा, उसे घर-परिवार की चिन्ता छोड़ देश की खातिर अपना सर्वस्व अर्पण करने के लिए स्वतंत्रता के महासमर में कूदते देर नहीं लगी।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्ता ने "भारत-भारती" में देशप्रेम की भावना को सर्वोपरि मानते हुए आवाहन किया-

"जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।

वह नर नहीं, नर-पशु निरा है और मृतक समान है।।"

देश पर मर मिटने वाले वीर शहीदों के कटे सिरों के बीच अपना सिर मिलाने की तीव्र चाहत लिए सोहन लाल द्विवेदी ने कहा-

"हो जहाँ बलि शीश अगणित, एक सिर मेरा मिला लो।"

वहीं आगे उन्होंने "पुष्प की अभिलाषा" में देश पर मर मिटने वाले सैनिकों के मार्ग में बिछ जाने की अदम्य इच्छा व्यक्त की-

"मुझे तोड़ लेना बनमाली! उस पथ में देना तुम फेंक।

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जायें वीर अनेक।।"

सुभद्रा कुमारी चौहान की "झाँसी की रानी" कविता को कौन भूल सकता है, जिसने अंग्रेजों की चूलें हिला कर रख दी। वीर सैनिकों में देशप्रेम का अगाध संचार कर जोश भरने वाली अनूठी कृति आज भी प्रासंगिक है-

"सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,

बूढ़े भारत में भी आई, फिर से नई जवानी थी,

गुमी हुई आजादी की, कीमत सबने पहिचानी थी,

दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,

चमक उठी सन् सत्तावन में वह तनवार पुरानी थी,

बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी की रानी थी।।"

"पराधीन सपनेहुँ सुख नाही" का मर्म स्वाधीनता की लड़ाई लड़ रहे वीर सैनिक ही नहीं वफादार प्राणी भी जान गये [10]तभी तो पं. श्याम नारायण पाण्डेय ने महाराणा प्रताप के घोड़े 'चेतक' के लिए "हल्दी घाटी" में लिखा-

"रणबीच चौकड़ी भर-भरकर, चेतक बन गया निराला था,

राणा प्रताप के घोड़े से, पड़ गया हवा का पाला था,

गिरता न कभी चेतक तन पर, राणा प्रताप का कोड़ा था,

वह दौड़ रहा अरि मस्तक पर, या आसमान पर घोड़ा था।।"

देशप्रेम की भावना जगाने के लिए जयशंकर प्रसाद ने "अरुण यह मधुमय देश हमारा" सुमित्रानंदर पंत ने "ज्योति भूमि, जय भारत देश।" निराला ने "भारती! जय विजय करे। स्वर्ग सस्य कमल धरे।।" कामता प्रसाद गुप्त ने "प्राण क्या हैं देश के लिए के लिए। देश खोकर जो जिए तो क्या जिए।।" इकबाल ने "सारे जहाँ से अच्छा हिस्तोस्ताँ हमारा" तो बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने 'विप्लव गान' में

"कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाये

एक हिलोर इधर से आये, एक हिलोर उधर को जाये

नाश! नाश! हाँ महानाश!! की

प्रलयकारी आँख खुल जाये।।"

कहकर रणबांकुरों में नई चेतना का संचार किया। इसी श्रृंखला में शिवमंगल सिंह 'सुमन', रामनरेश त्रिपाठी, रामधारी सिंह 'दिनकर' राधाचरण गोस्वामी, बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन, राधाकृष्ण दास, श्रीधर पाठक, माधव प्रसाद शुक्ल, नाथूराम शर्मा शंकर, गया प्रसाद शुक्ल स्नेही (त्रिशूल), माखनलाल चतुर्वेदी, सियाराम शरण गुप्त,[11] अज्ञेय जैसे अगणित कवियों के साथ ही बंकिम चन्द्र चटर्जी का देशप्रेम से ओत-प्रोत "वन्दे मातरम्" गीत-

## International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: [www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

Vol. 7, Issue 12, December 2018

वन्दे मातरम्!

सुजलां सुफलां मलयज शीतलां

शस्य श्यामलां मातरम्! वन्दे मातरम्!

शुभ्र ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम्

फुल्ल-कुसुमित-दुरमदल शोभिनीम्

सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्

सुखदां वरदां मातरम्! वन्दे मातरम्! “

.....जो आज हमारा राष्ट्रीय गीत है, जिसकी श्रद्धा, भक्ति व स्वाभिमान की प्रेरणा से लाखों युवक हंसते-हंसते देश की खातिर फांसी के फंदे पर झूल गये। वहीं हमारे राष्ट्रगान “जनगण मन अधिनायक” के रचयिता रवीन्द्र नाथ ठाकुर का योगदान अद्वितीय व अविस्मरणीय है।

स्वतंत्रता दिवस के सुअवसर पर बाबू गुलाबराय का कथन समीचीन है – “15 अगस्त का शुभ दिन भारत के राजनीतिक इतिहास में सबसे अधिक महत्व है। आज ही हमारी सघन कलुष-कालिमामयी दासता की लौह श्रृंखला टूटी थी। आज ही स्वतंत्रता के नवोज्ज्वल प्रभात के दर्शन हुए थे। आज ही दिल्ली के लाल किले पर पहली बार यूनियन जैक के स्थान पर सत्य और अहिंसा का प्रतीक तिरंगा झंडा स्वतंत्रता की हवा के झोंकों से लहराया था। आज ही हमारी नेताओं के चिरसंचित स्वप्न चरितार्थ हुए थे। आज ही युगों के पश्चात् शंख-ध्वनि के साथ जयघोष और पूर्ण स्वतंत्रता का उद्घोष हुआ था।”

ऐ मेरे वतन के लोगों ज़रा आंख में भर लो पानी गीत को याद करते हुए सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं सहित जय हिन्द! जय भारत!

.....कविता रावत

जयशंकर प्रसाद ने 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' सुमित्रानंदन पंत ने 'ज्योति भूमि, जय भारत देश।' इकबाल ने 'सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा' तो बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने 'विप्लव गान' लिखा। इन सबके अलावा बंकिमचंद्र चटर्जी का देशप्रेम से ओत-प्रोत गीत 'वन्दे मातरम्' ने लोगों की रगों में उबाल ला दिया।[12]

### निष्कर्ष

हिंदी साहित्य और पत्रकारिता में भारतेंदु के युग को न सिर्फ हिंदी भाषी लोगों में जागरूकता का स्वर्णकाल माना जाता है बल्कि इसने ब्रिटिश दमन का भी कड़ा प्रतिकार किया। 1903 में 'सरस्वति' के संपादक का दायित्व महावीर प्रसाद द्विवेदी पर आ गया और हिंदी पुनर्जागरण का तीसरा चरण आरंभ हुआ। इस युग के दौरान कविता में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याएं मुखर हुईं जबकि गीतों में सामाजिक जागरण को प्रमुखता मिली। 1907 में पंडित मदन मोहन मालवीय ने प्रयाग से साप्ताहिक साहित्य का प्रकाशन का शुरू किया और उसी वर्ष माधव राव सप्रे ने नागपुर से हिंद केसरी निकाला। गणेश शंकर विद्यार्थी ने 1910 में कानपुर से 'जोशिला' और 'क्रांतिकारी' साप्ताहिक प्रताप प्रकाशित किया, जो राष्ट्रवादी युवाओं की आवाज था।

हिंदी पत्रकारिता के लिए एक और महत्वपूर्ण योगदान 1913 में 'प्रभा' का प्रकाशन था, जिसे पहले कालूराम गंगराडे, माखनलाल चतुर्वेदी खंडवा से प्रकाशित करते थे। लेकिन बाद में 1919 में कानपुर की 'प्रताप' प्रेस से प्रभा का प्रकाशन निकलने लगा। प्रभा स्वतंत्रता संघर्ष के लिए एक समर्पित समाचार पत्र था। 'प्रभा' और 'प्रताप' के साथ 'चांद' भी एक महत्वपूर्ण पत्रिका थी। चांद से ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध राष्ट्रवाद के बीज बोए और स्वाधीनता आंदोलन के दौरान महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्वतंत्रता संघर्ष में सहायता करने के लिए 1920 में शिव प्रकाश गुप्त ने काशी से 'आज' का प्रकाशन शुरू किया। 19 अगस्त 1919 को गांधी जी ने 'नवजीवन' का हिंदी संस्करण आरंभ किया। आचार्य शिवपूजन सहाय ने 1922 में मासिक पत्रिका आदर्श का संपादन शुरू किया। कोलकाता से 26 अगस्त 1923 से हिंदी साप्ताहिक मतवाला की शुरुआत हुई, जिसमें

## International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: [www.ijirset.com](http://www.ijirset.com)

Vol. 7, Issue 12, December 2018

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महावीर प्रसाद सेठ, शिवपूजन सहाय, बेचैन शर्मा नवजादिक लाल श्रीवास्तव जैसे प्रसिद्ध साहित्यकारों को आकर्षित किया।[12]

1928 से कोलकाता से ही बनवारी दास चतुर्वेदी ने विशाल भारत मासिक का संपादन आरंभ किया और 1933 में गांधी जी ने 'हरिजन सेवक' निकाला, जो अस्पृश्यता और गरीबी से उनकी लड़ाई का प्रमुख साधन बना।

### संदर्भ

1. Nelson, Dean (7 July 2010). "Ministers to build a new 'special relationship' with India". The Daily Telegraph. मूल से 7 फ़रवरी 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 20 नवंबर 2016.
2. File:Indian revolt of 1857 states map.svg
3. ↑ The Gurkhas by W. Brook Northey, John Morris. ISBN 81-206-1577-8. Page 58
4. ↑ "1857 की क्रांति ने आजादी के लिए लड़ने का जज्बा दिया". नवभारत टाइम्स. अभिगमन तिथि 2021-08-15.
5. ↑ Eric Stokes "The First Century of British Colonial Rule in India: Social Revolution or Social Stagnation?" Past and Present №.58 (Feb. 1973) pp136-160
6. ↑ Seema Alavi The Sepoys and the Company (Delhi: Oxford University Press) 1998 p5
7. भसीन, अनीस. भारत के राज्य. प्रभात प्रकाशन. पृ० 47-48. मूल से 5 मार्च 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 6 जून 2015.
8. ↑ "History of Uttaranchal". मूल से 4 मार्च 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 6 जून 2015.
9. ↑ "Notes on Nepal". मूल से 4 मार्च 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 6 जून 2015.
10. ↑ Robert Montgomery Martin, History of the Possessions of the Honourable East India Company, Volume 1, pg. 107
11. ↑ Tehri – History Archived 2008-09-23 at the Wayback Machine New Tehri Official website.
12. ↑ मित्तल, अरुण कुमार. British Administration in Kumaon Himalayas: A Historical Study, 1815-1947. पृ० 17-18. मूल से 4 मार्च 2016 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 6 जून 2015.